माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत
(Population Theory of Malthus)

जनसंख्या किसी भी राष्ट्र का सबसे महत्व पूर्ण संसाधन है इस के बिना तो राष्ट्र / देश की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। वास्तव में जनसंख्या, संसाधनों का निर्माणकर्ता भी है साथ ही उपभोगकर्ता भी। प्राचीन काल से मानव की संख्या बढ़ती है। लेकिन 18वीं शती में जनसंख्या विभिन्न कारणों से बहुत ही तीव्र गति से आगे बढ़ी तो जनसंख्याविद् बढ़ती जनसंख्या से चिंतित होने लगे। बढ़ी जनसंख्या पर विद्वानों के कई विचार सामने आये उनमें कुल 19 तथा 20 वीं सदी के भी हैं जो निम्नवत हैं —

1) माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत (Population Theory of Malthus)
2) अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत (Optimum Population Theory)
3) जनसंख्या संक्रमण सिद्धांत (Population Transitional Theory)
4) तकनीकी- प्रशासन सम्बंधी सिद्धांत (Technocratic Theory)

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत
(Population Theory of Malthus)

18वीं शताब्दी के अंतिम चरण में अंग्रेजी विद्वान थामस राबर्ट माल्थस ने जनसंख्या का आर्थिक दृष्टि से अध्ययन किया तथा सन 1798 ई० में अपनी पुस्तक "Essay on Principles of Population" में जनसंख्या वृद्धि से सम्बंधित अपने विचार प्रस्तुत किये। माल्थस के विचार निम्न दो अभिगृहीतों पर आधारित हैं —

1) मनुष्य के अस्तित्व के लिये भोजन आवश्यक है।
2) स्त्री - पुरुष के बीच यौन आकर्षण स्वाभाविक है।

माल्थस के अनुसार जनसंख्या में वृद्धि की शक्ति पृथ्वी के द्वारा निर्वाह करने वाली शक्ति से अधिक है। किसी भी देश में जनसंख्या निर्वाह के साधन सीमित होते

हाँ वहीं जनसंख्या तेजी से बढ़ती है। माल्थस के अनुसार जीवन निर्वाह के साधनों का उत्पादन अंक गणितीय अनुपात में अर्थात 1:2:3:4:5:6:7:8:9:10 में होता है। वहीं जनसंख्या की वृद्धि ज्यामितीय अनुपात में अर्थात 1:2:4:8:16:32:64 .... की दर से बढ़ती है।

यदि जनसंख्या वृद्धि और खाद्यान्न वृद्धि के बीच कोई अवरोधक अर्थात युद्ध, महामारी अकाल आदि नहीं आते हैं तो जनसंख्या मात्र 25 वर्षों में दुगुनी हो जायेगी।

यदि जनसंख्या अनियंत्रित बढ़ती जाती है तो कुछ ही वर्षों में जीवन निर्वाह संसाधन और जनसंख्या के बीच असंतुलन उत्पन्न हो जाती है। जिसकी परिणति प्राकृतिक प्रकोपों युद्ध, भूकंप, बाढ़, महामारी, अकाल आदि रूपों में होगी। इसके बाद स्वयं प्रकृति को सामने आना पड़ता है। जैसा कि नीचे माल्थूसियन चक्र को दिखलाया गया है —

माल्थस के विचारों के अनुसार जनसंख्या - उत्पादन सम्बन्धों के तीन चरण होते हैं —

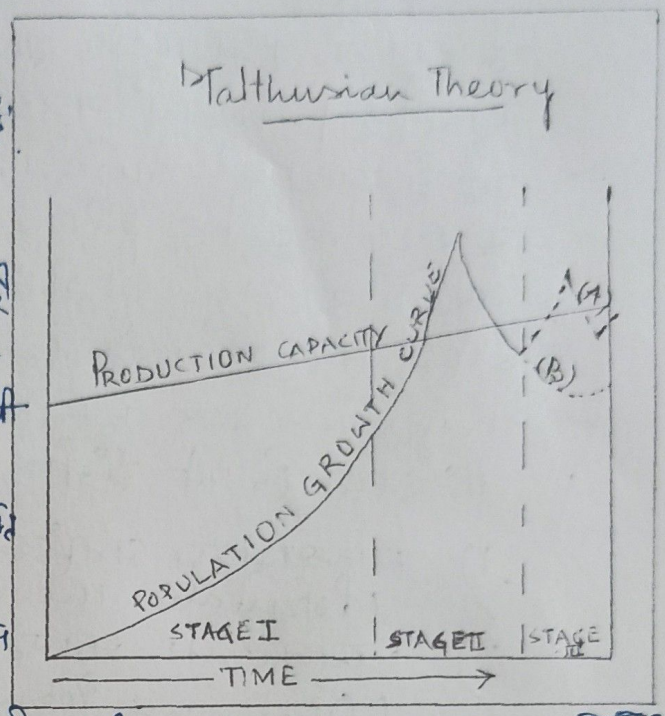

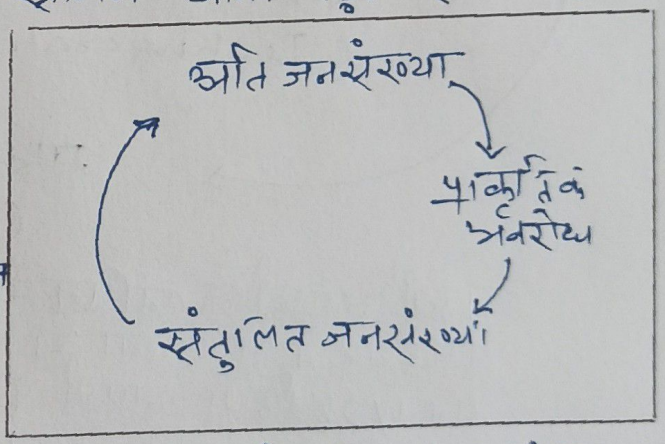

- प्रथम चरण (stage I) में मनुष्य की भोजन सम्बंधी आवश्यकताएँ उत्पादन क्षमता से कम होती है।
- द्वितीय चरण (stage II) में कृषि उत्पादन क्षमता और मानव आवश्यकताएँ लगभग बराबर होती हैं।
- तृतीय चरण (stage III) में मानव की भोजन सम्बंधी आवश्यकताएं कृषि उत्पादन क्षमता से अधिक होती हैं।

जनसंख्या नियंत्रण सम्बंधी– माल्थस के सुझाव –

माल्थस के अनुसार खाद्यान्न अंकगणितीय [ब]ढ़ती तथा जनसंख्या ज्यामितीय पद्धति से बढ़ती है इस [क]ारण जनसंख्या खाद्यान्न उत्पादन से कहीं आगे निकल [ज]ाती है। इसलिये जनसंख्या को नियंत्रित करना आवश्यक [है]। जनसंख्या को सीमित करने के दो उपाय टी० आर० माल्थस [ने] सुझाए हैं जो निम्नवत हैं —

[1]) प्राकृतिक या नैसर्गिक निरोध – इस के अन्तर्गत प्रकृति द्वारा अपनाये गये निरोध आते हैं। ये मृत्यु दर को बढ़ाते हैं। प्राकृतिक अवरोधक में बाढ़, अकाल, भूकंप, युद्ध, महामारी मुख्य हैं। माल्थस ने अपने लेख में ऐसे प्राकृतिक अवरोध का वर्णन किया है इससे अतिरिक्त जनसंख्या समाप्त हो जाती है और इस प्रकार वहाँ की जनसंख्या संतुलित हो जाती है।

[2]) कृत्रिम निरोध (Preventive checks) – इसके अन्तर्गत उन [स]भी उपायों का समावेश किया गया है जो मानव स्वविवेक [से] जनसंख्या नियंत्रित करने के लिए अपनाता है। इसके अन्तर्गत माल्थस दो उपायों का उल्लेख किया –

[i]) नैतिक संयम – इसके अंतर्गत वे निरोध आते हैं जिनका सम्बन्ध मनुष्य के नैतिक आचरण से है जैसे – [दे]र से शादी, ब्रह्मचर्य, संयमित वैवाहिक जीवन है माल्थस [ने] देर से शादी करने अथवा अविवाहित जीवन व्यतीत करने का सुझाव दिया।

[ii]) पाप (vices) – इसके अंतर्गत जनसंख्या नियंत्रण के कृत्रिम साधन आते हैं जैसे गर्भपात, संतति निग्रह के साधनों का प्रयोग, मिश्रित तथा अप्राकृतिक संभोग आदि।

माल्थस ने कहा कि यदि मानव जनसंख्या नियंत्रण के उपाय नहीं अपनाये तो उसे प्राकृतिक प्रकोपों के गंभीर परिणाम भुगतान करने पड़ेंगे।

ाल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की आलोचना

माल्थस के सिद्धांत के प्रतिपादन होते ही इसकी आलोचना शुरू हो गयी। वास्तव में वर्णित सिद्धांत कृषि उत्पादन को ध्यान में रखकर दिया गया था। लेकिन औद्योगिक क्रांति ने यातायात के साधनों के विकास तथा विस्तार ने कृषि तथा उत्पादन के अन्य साधनों का तीव्र गति से विकास हुआ। लोगों की जीवन स्तर में सुधार होने लगा तथा जन्मदर में कमी आने लगी। इन परिवर्तन को देख कर माल्थस के सिद्धांत लोगों को हास्यास्पद लगने लगे।

इस सिद्धांत की आलोचना के बावजूद विश्व की घटनं ने इसे पुनर्जीवित किया है। प्रथम विश्व युद्ध, द्वितीय विश्व युद्ध कालाजार, इन्फ्लुएंजा तथा साहेल क्षेत्र में कई वर्षों से प रहे अकाल की विपदा ने माल्थस के सिद्धांत को क्रियाश किया है। लेकिन आज कृषि, उद्योग, पशु पालन, समु विज्ञान, मेडिकल साइन्स के विकास ने इस जनसंख सिद्धांत को पुनः पृष्ठभूमि में डाल दिया है।

—— x ——